Motherhood International Journal of Multidisciplinary Research & Development
A Peer Reviewed Refereed International Research Journal
Volume IV, Issue II, February 2020, pp. 32-36
ONLINE ISSN-2456-2831

वैश्विक शांति शिक्षा का महत्व एवं योगदान

डॉ0 अवधेश कुमार कौशल[1], जौली चौहान[2]
[1]प्रोफेसर, [2]सहायक प्रोफेसर
विज्ञान संकाय, मदरहुड यूनिवर्सिटी, रुड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

सारांश

शिक्षा का समग्र विकास नवीनतम विधाओं के साथ समाज को व्यवस्थित रखने का प्रयास करती है इसी कड़ी में शांति शिक्षा ने व्यापक रूप प्राप्त किया है जो जो विकासन्मुख देशो के लिए नितांत आवश्यक है। शांति शिक्षा एक सक्रिय दृष्टिकोण है जिसका मुख्य उद्देश्य अहिंसा सहिष्णुता समानता मतभेदों के सम्मान और सामाजिक न्याय के आधार पर एक संघर्ष को रोकने के लिए शांतिपूर्ण अस्तित्व के लिए समाज को शिक्षित करना है। आज विश्व उभरती समस्याओं जिसमें मुख्य आतंकवाद, जातीय हिंसा और विकसित एवं अविकसित देशों के मध्य अंतर का व्यापक रूप से सामना किया और कर रहा है। शांति शिक्षा एक सुसंगठित विचार के साथ समस्त समाज को सामंजस्य पूर्ण वातावरण में रहने को प्रेरित करती है। प्रसिद्ध शांति शिक्षा के विचारक महात्मा गांधी, मदर टेरेसा और मार्टिन लूथर किंग जूनियर थे जिन्होंने संपूर्ण विश्व को शांति शिक्षा के रूप में आगे बढ़ने हेतु प्रेरित किया। यूनेस्को का प्रमुख कार्य शिक्षा प्रकृति एवं समाज विज्ञान संस्कृति तथा संचार माध्यम से अंतरराष्ट्रीय शांति की स्थापना को बढ़ावा देना है। शांति शिक्षा का ज्ञान स्कूली स्तर से ही पाठ्यक्रम पर शामिल किया गया है, जिससे छात्रों के छात्रों शांति के प्रति बौद्धिक स्तर पर ज्ञान हो सके। आज व्यक्ति वर्ग समाज देश विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा है क्योंकि संचार व्यवस्था के बढ़ते कदम एक आखिरी रूप में जीवन में बढ़ रहा है तनाव कुंठा रोजगार की कमी अनिद्रा हिंसा आदि के कारण व्यक्ति का जीवन नीरस आत्महत्या आदि की तरफ बढ़ रहा है।

वर्तमान में शांति शिक्षा को व्यक्तिगत आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक एवं वैश्विक रूप में दूसरों पर पाठ्यक्रमों में शामिल किया जा रहा है। शांति शिक्षा का ज्ञान स्कूली स्तर से ही पाठ्यक्रम पर शामिल किया गया है, जिससे छात्रों के छात्रों शांति के प्रति बौद्धिक स्तर पर ज्ञान हो सके।

संकेत शब्दः यूनीसेफ, शांति, एन.सी.आर.टी., पर्यावरण संरक्षण संयुक्त राष्ट्र और यूनेस्को

परिचय

शिक्षा जो समाज में जनजागृति के साथ समाज को निरंतर गतिमान रखती है शिक्षा का समग्र विकास नवीनतम विधाओं के साथ समाज को व्यवस्थित रखने का प्रयास करती है इसी कड़ी में शांति शिक्षा ने व्यापक रूप प्राप्त किया है जो जो विकासन्मुख देशो के लिए नितांत आवश्यक है। प्रथम विश्व युद्ध (1914 –18 एंव द्वितीय विश्व युद्ध (1939 –45) हिरोशिमा नागासाकी के परमाणु युद्ध के भयावहता को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने यूनेस्को की स्थापना की। विश्व शांति और सुरक्षा सुरक्षा की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और शिक्षा में सामान्य परिवर्तन की योजना बनाने, विकास करने और कार्यवित करने के उद्देश्य प्रेरित किया। यूनेस्को संगठन के कानून ने शांति के विकास में शिक्षा की भूमिका के सिद्धांत को मजबूत किया और सामान्य विश्व

शिक्षा प्रणाली में शांति के सिद्धांतों को शामिल करने एवं लागू करने के लिए एक ढांचा बनाया गया। संयुक्त राष्ट्र ने शांति शिक्षा के महत्ता को देखते हुए पूर्व संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून ने सन 2013 में विश्व शांति दिवस के रूप में समर्पित करते हुए यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन) एवं संयुक्त राष्ट्र ने शांति की मूल महत्ता स्वीकार करते हुए एक मिशन के रूप में शामिल किया। प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध की भयावहता को देखते हुए भावी तृतीय विश्व युद्ध के प्रति समय–समय पर विभिन्न देशों के बढ़ते कदमों को रोकने के लिए संपूर्ण विश्व को को सचेत करने का कार्य करती है। जापान पर हुए परमाणु युद्ध की विभीषिका को देखते हुए खतरनाक परिणामों के प्रति संपूर्ण मानवीय जाति को शांति शिक्षा के महत्ता को इंगित करती रहती है। महात्मा गांधी, मदर टेरेसा और मार्टिन लूथर किंग जूनियर प्रसिद्ध शांति शिक्षा के विचारक थे जिन्होंने संपूर्ण विश्व को शांति शिक्षा के रूप में आगे बढ़ने हेतु प्रेरित किया।

शांति शिक्षा

शांति शिक्षा का शैक्षणिक अध्ययन नवीनतम वैश्विक चिंतन है। शांति शिक्षा एक सुसंगठित विचार के साथ समस्त समाज को सामंजस्य पूर्ण वातावरण में रहने को प्रेरित करती है, जिससे वह समाज को व्यवस्थापूर्ण अपने दायित्वों को अहिंसात्मक तरीके से निर्वहन कर सकें शांति शिक्षा का मूल्यॉ ज्ञान एवं व्यवहार कौशल और व्यवहार को विकसित करने की प्रक्रिया है। यह दूसरों के साथ प्राकृतिक वातावरण के साथ रहती है।

यूनेस्को एवं यूनीसेफ का योगदान

यूनेस्को का पूरा नाम संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन स्थापना 4 नवंबर 1945 में हुई थी। इसका प्रमुख कार्य शिक्षा प्रकृति एवं समाज विज्ञान संस्कृति तथा संचार माध्यम से अंतरराष्ट्रीय शांति की स्थापना को बढ़ावा देना है। इसका मुख्यालय फ्रांस में है। भारत 1946 में यूनेस्को संगठन का सदस्य देश बना, आज इस संगठन में 195 सदस्य देश है।

यूनीसेफ (संयुक्त राष्ट्र बाल कोष) को 1965 में उसके बेहतर कार्य के लिए शांति के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 1989 में संगठन को इंदिरा गाँधी शांति पुरस्कार भी प्रदान किया गया था। इसका मुख्यालय न्यूयॉर्क में है।

कैलाश सत्यार्थी को वर्ष २०14 का नोबेल शान्ति पुरस्कार जो उन्हें पाकिस्तान की नारी शिक्षा कार्यकर्ता मलाला युसुफजई के साथ सम्मिलित रूप से प्रदान किया गया है।

शांति शिक्षा के प्रति विचार

सन 1990 के बाद विश्व ने उभरती समस्याओं का व्यापक रूप से सामना किया और कर रहा है जिसमें मुख्य आतंकवाद, जातीय हिंसा और विकसित एवं अविकसित देशों के मध्य अंतर ने शांति शिक्षा को नवीन दृष्टि की समझ एवं जिम्मेदारी के अंतर्निहित सिद्धांतों के विकास के लिए नई चुनौतियां प्रस्तुत की हैं।

पर्यावरण संरक्षण के शिक्षण एवं मानव अधिकारों हेतु जन जागृत किया हैं। आज शांति शिक्षा विविधताओं से पूर्व क्षेत्र है जिसमें कई शोध संस्थानों एवं विभिन्न विषयों के वस्तु विशेषज्ञों की सैद्धांतिक अनुसंधान एवं व्यापारिक गतिविधियां शामिल है । सन 1964 में स्थापित अंतरराष्ट्रीय शांति पुनः अनुसंधान संघ है जो इस दिशा में कर रहा है मनोवैज्ञानिक गार्डन ऑलपोर्ट (1954) संपर्क परिकल्पना को प्रमुख रूप से लागू किया जिसका मुख्य लक्ष्य संघर्ष में समूह के बीच संबंधों को बदलना है। विश्व में प्रसिद्ध लेखकों ने शांति शिक्षा को अपने विचारों के द्वारा शांति की महत्ता पर व्यापक प्रकाश डाला उन्हें प्रयोज्य ईंधन स्रोत प्रौद्योगिकी विकसित करना विश्व शांति में प्रमुख भूमिका प्रदान करता है। राजनीतिक रुप से पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश अनुसार लोकतंत्र का

प्रयाण विश्व शांति का नेतृत्व करेगा। मार्क्सवादी विचारक लियोन त्रोत्सकी लियोन त्रोत्सकी अनुसार विश्व क्रांति कम्युनिस्ट विश्व शांति का नेतृत्व करेंगी। आर्थिक मानदंडों के रूप में बाजारोंन्मुख अर्थ व्यवस्थाएं राष्ट्रों के भीतर और उनके बीच स्थाई शांति की पहचान देता है। शांति एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें समाज का सर्वांगीण विकास की भावना निहित है यह देशों के प्रति एवं लोगों के मध्य आपसी सहमति एवं प्रसंता का आदर्श प्रतीक है जिससे पृथ्वी में अहिंसा का प्रादुर्भाव होता है जिसमें स्वेच्छा से सहयोग प्रदान करते हैं। यह किसी भी युद्ध को समापन करने की अद्‌भुत शक्ति प्रदान करती है।

शांति शिक्षा प्रति विभिन्न लेखकों के अनुसार उनके कथन जो विश्व प्रसिद्ध हुए, इसके कुछ उदाहरण हैं

1. सिवाय आप के कोई भी आपको चौन नहीं दे सकता। (राल्फ वाल्डो एमरसन)
2. शांति की शुरुआत मुस्कुराहट के साथ होती है। (मदर टेरेसा)
3. शांति अपने आप में नाम है। (महात्मा गांधी)
4. हम इसलिए युद्ध करते हैं कि हम शांति से रह सके। (अरस्तु)
5. शांति पहली चीज है जो कि फरिश्तों ने गाई। (जॉन केबले)

छात्रों में शांति शिक्षा का लक्ष्य

छात्रों को अहिंसक संघर्ष समाधान, कौशल हासिल करने और शांति के मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए समाज में सक्रिय और जिम्मेदार कार्रवाई के लिए इन कौशल को मजबूत करने में मदद करना है। शांति शिक्षा एक सक्रिय दृष्टिकोण है जिसका मुख्य उद्देश्य अहिंसा सहिष्णुता समानता मतभेदों के सम्मान और सामाजिक न्याय के आधार पर एक संघर्ष को रोकने के लिए शांतिपूर्ण अस्तित्व के लिए समाज को शिक्षित करना है।

भारतीय शिक्षा में शांति शिक्षा का योगदान

राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.आर.टी.) ने शांति शिक्षा की महत्ता समझते हुए इसे स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया जिसमें समानता सामाजिक न्याय मानव अधिकार सहिष्ुता और सांस्कृतिक विविधता को शामिल किया गया है।

डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन साइकोलॉजी एंड फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन (डी. बी. ए. एफ. इ., 2005) से शांति शिक्षा पेश कर रही है और शांति शिक्षा को पूर्णत है। स्कूल शिक्षा का अंग बनाने की सिफारिश की गई है।

आज देश में आज असहिष्ुता, कट्टरवाद और विवाद का समाज में विस्तृतीकरण हो रहा है जो विकास और कल्याणकारी कार्यों में बाधा उत्पन्न कर रहा है। राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर शांति शिक्षा को राष्ट्रीय स्कूली शिक्षा पाठ्यक्रमों के ढांचे में महत्वपूर्ण स्थान दिए जाने की जरूरत है शांति शिक्षा व्यक्ति समाज एवं देश को के विकास में महती योगदान दे रहा है। शिक्षा का मानव विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। मानव के विकास क्रम में आज शांति शिक्षा का ज्ञान होना नितांत आवश्यक है।

वर्तमान में शांति शिक्षा को व्यक्तिगत आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक एवं वैश्विक रूप में दूसरों पर पाठ्यक्रमों में शामिल किया जा रहा है। शांति शिक्षा अथार्त मानवता की शिक्षा प्रदान करने वाली शिक्षा जिससे सभी लोग विभिन्न वर्गों समाज देशों के लोग आपस में परस्पर शांति से रहे इसके द्वारा बढ़ती हिंसा, तनाव और आत्महत्या आदि को नियंत्रित किया जा सकता है। शांति शिक्षा सकारात्मक सोच की तरफ एक सुखद पहल है जिसे शांति मय जीवन को जिया जा सकता है।

निष्कर्ष

शांति शिक्षा का ज्ञान स्कूली स्तर से ही पाठ्यक्रम पर शामिल किया गया है, जिससे छात्रों के छात्रों शांति के प्रति बौद्धिक स्तर पर ज्ञान हो सके। आज व्यक्ति वर्ग समाज देश विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा है क्योंकि संचार व्यवस्था के बढ़ते कदम एक आखिरी रूप में जीवन में बढ़ रहा है तनाव कुंठा रोजगार की कमी अनिद्रा हिंसा आदि के कारण व्यक्ति का जीवन नीरस आत्महत्या आदि की तरफ बढ़ रहा है। स्कूली पाठ्यक्रम में सन 2005 से शामिल कर लिया गया है जिससे बच्चों में शांति के प्रति बौद्धिक ज्ञान का सृजन किया जा सके। शांति शिक्षा देशों के व्यक्तियों के वर्गों के मध्य एक नैसर्गिक कड़ी के रूप में कार्य कर रहा है।

संयुक्त राष्ट्र ने यूनेस्को की स्थापना कर संपूर्ण विश्व को शांति के उद्देश्य महत्व एवं जन जागृति के रूप में विशेष कार्य किया है प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका को देखते हुए भविष्य में तृतीय विश्व युद्ध नहीं हो के प्रति समय–समय पर विश्व स्तर पर जन जागृति अभियान चलाया जाता रहा है। पर्यावरण समस्या एक उभरती सामाजिक समस्या व्यापक रूप से उत्पन्न हो रही है जिसका विश्व स्तर पर का कार्य किए जा रहे हैं जो कि शांति शिक्षा का एक भाग है एक सार्वभौमिक विविध पूर्ण ज्ञान है जो जीवन को सुचारू रूप से चलाने में सहायक है।

संदर्भ सूची

1. http://education.stateuniversity.com/pages/2314/Peace-Education.html
2. https://hi.wikipedia.org/wiki/यूनेस्को_के_साथ_सहयोग_के_लिए_भारतीय_राष्ट्रीय_आयोग
3. ALLPORT, GORDON. 1979. *The Nature of Prejudice,* unabridged 25th edition. Reading, MA: Perseus Books.
4. http://hindi.webdunia.com/article/national-hindi-news/एनसीईआरटी–के–पाठ्यक्रम–में–शांति–शिक्षा -108063000085_1.htm
5. http://www.educationjournal.org/archives/2018/vol3/issue2/3-1-155
6. http://www.ncert.nic.in/rightside/links/pdf/h_focus_group/Shanti%20Ke%20Liye%20Shiksha.pdf
7. https://hi.wikipedia.org/wiki/युनेस्को
8. http://www.educationjournal.org/
9. http://hindi.webdunia.com/national-hindi-news/ एनसीईआरटी-के-पाठ्यक्रम-में-शांति-शिक्षा-108063000085_1.htm
10. http://www.educationjournal.org/archives/2018/vol3/issue2/3-1-155
11. *www.scertup.co.in/doc/SCERT/upload/ImpDocs/Doc_id_313.pdf*
12. http://www.scertup.co.in/doc/SCERT/upload/ImpDocs/Doc_id_313.pdf
13. https://www.achhikhabar.com/2012/08/06/peace-quotes-in-hindi/

14. माइकल मोसे, ''द सोशल मार्केट रूट्स ऑफ डेमोक्रेटिक पिस,'' इंटरनैशनल सिक्योरिटी, खंड 33, संख्या 4 (स्प्रिंग 2009), 52-86.
15. माइकल मोसे, ''मार्केट सिविलाइजेशन एंड इट्स क्लेश विद टेरर,'' इंटरनैशनल सिक्योरिटी, खंड 27, संख्या 3 (विंटर 2002-2003), 5-29.
16. https://georgewbush-whitehouse.archives.gov/news/releases/2005/10/20051017-1.html (बल्गेरियाई राष्ट्रपति जॉर्जी पुर्वनोव के साथ राष्ट्रपति की बैठक)
17. https://www.marxists.org/archive/trotsky/1914/war/index.htm (लेओन ट्रोट्स्कीः युद्ध और अंतर्राष्ट्रीय (1914)
18. https://hi.wikipedia.org/wiki/ विश्व–शांति
19. http://www.educationjournal.org/archives/2018/vol3/issue2/3-1-155